छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य

डॉ. नसरीन जान

लोक साहित्य उस दर्पण के समान है जिसमें जनता का विराट स्वरूप प्रतिबिम्बित होता है। लोक साहित्य के अध्ययन से किसी भी देश का ज्ञान प्राप्त करने में बहुत सहायता मिलती है। किसी संस्कृति विशेष के उत्थान-पतन, उतार-चढ़ाव का जितना सफल अंकन लोक साहित्य में रहता है, उतना किसी ओर में नहीं। इस मौखिक साहित्य में धर्म, समाज तथा सदाचार सम्बंधी अमूल्य सामग्री भरी पड़ी है। इसके साथ ही स्थानीय इतिहास तथा भूगोल संबंधी बातें भी इससे उपलब्ध होती हैं। भाषा शास्त्री के लिए तो यह साहित्य सागर के समान है, जिसमें गोता लगाने पर उसे अनेक अनमोल रत्न प्राप्त हो सकते हैं।

लोक साहित्य मानव की सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। यह अधिकांशत: अलिखित ही रहता है और अपनी मौखिक परम्परा द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ता है। वस्तुत: लोक साहित्य लोक संस्कृति का वास्तविक प्रतिबिम्ब होता है। लोक साहित्य का क्षेत्र बहुत व्यापक है। लोक साहित्य के विद्वानों का मानना है कि जहाँ-जहाँ लोक है, वहीं-वहीं लोक साहित्य भी उपलब्ध होता है। लोक साहित्य के विविध प्रकार है जिन्हें मौटे तोर पर इस प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है- लोकथा, लोकगाथा, लोकगीत, लोकनाट्य, लोक कलाएँ, लोक मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ आदि।

भारतीय लोक साहित्य के आरम्भ की बात करें तो इसके प्राचीनतम उदाहरण हमें ऋग्वेद में ही प्राप्त होते हैं। भगवान बुद्ध के जीवन चरित्र को लेकर पालि भाषा में अनेक कथा प्रसिद्ध हुई है। इसी प्रकार हितोपदेश पंचतंत्र आदि की अनेक कथाओं, लोक व्यवहार, लोकनीति और लोक परम्पराओं से हमारा लोक साहित्य सिंचित है।

भारत जैसे विशाल देश में जहाँ अनेक भाषाओं और अनेकानेक संस्कृतियों का संगम है वही कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भारतीय लोक साहित्य की सुदीर्घ श्रृंखला भी है। भारतीय लोक साहित्य के छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य के अंतर्गत जितनी विवधता है उतनी अन्यत्र कम ही मिलती है। छत्तीसगढ़ भारत का ऐसा राज्य है जिसे 'मह तारी' (माँ) का दर्जा दिया गया है। छत्तीसगढ़ तो वैदिक और पौराणिक काल से ही विभिन्न संस्कृतियों के विकास का केन्द्र रहा है। इसकी भाषा छत्तीसगढ़ी है जो अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित पूर्वी हिन्दी की एक समृद्ध बोली है। छत्तीसगढ़ का लोक साहित्य अधिक समृद्ध है इसे अवधी और भोजपुरी से आधार मिलता है इसमें हमें अधिकांशत: मौखिक रूप ही मिलता है जिसे सदियों से कंठस्थ करने की परम्परा आज तक चली आ रही है। छत्तीसगढ़ी लोक भाषा सरल, सरस एवं प्रवाहमयी और लचीली भाषा है इसलिए

इसके लोक साहित्य का भी मधुर होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। यहाँ मैं छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य की चार प्रमुख धाराओं पर प्रकाश डालना चाहूँगी-

लोककथा- लोककथा या लोकवार्ता किसी मानव समूह की उस साझी अभिव्यक्ति को कहते है जो कथाओं, कहावतों, चुटकुलों आदि अनेक रूपों में अभिव्यक्त होता है। लोककथा छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य की एक प्रमुख धारा है जिसके अंतर्गत नीति व्रत धारा, धर्म, समाज, पुराण और इतिहास आदि विषय की बातें आती हैं। छत्तीसगढ़ी लोक कथाएं अधिकांशत: नीतिपरक है। इनमें उपदेश देना लोक कथासार का मूल उद्देश्य है। इन लोक कथाओं में ऐतिहासिक चरित्र भी प्रचुर रूप में उपलब्ध रहते हैं लेकिन इसके अंतर्गत ऐसी भी कथाएँ मिलती है जो इतिहास से उपेक्षित होते हुए भी स्थानीय इतिहास को उद्घाटित कर नए तथ्यों को उदघाटित करती है । इन लोक कथाओं में युगीन संदर्भ व तत्कालीन जीवन के चित्र भी उपलब्ध होते है । छत्तीसगढ़ी लोककथाओं में नागपंचमी, बहुरा चौथ, खमरछठ, गरजना, भाई दूज, बेटा जूतिया, भाई जूतिया, सुरहुती त्यौहार, सकट चौथ इत्यादि से सम्बंधित कथाएं आती है । उदाहरणत: 'रंगबती' कथा ग्रामीण अंचलों में सत्यनारयण कथा के प्रति आस्था और विश्वास को दर्शाती है । 'भोजली' कृषि प्रधान मानसिकता के साथ भावनात्मक संबंधों पर आधारित लोकाचार की कथा है। 'गौरा पूजा' कहानी में दीपावली के बाद गौरा विवाह की धूम और नारी शक्ति के प्रति आभार को दर्शाती है, 'छेर छेरा पर्व' अन्नदान के महत्त्व को रेखांकित करता है ।

लोकगाथा-लोकगाथा लोक कथागीत के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इसमें लम्बी कथा को गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। एफ. बी. गुमेर के अनुसार "लोकगाथा गायन के लिए रची ऐसी कविता होती है जो सामग्री की दृष्टि से व्यक्ति शून्य होती है और प्रारम्भ से समूह नृत्यों से जुड़ी हुई है पर यह 'मौखिक परंपरा' में पलती पनपती है, इसके गायक साहित्य के प्रभाव से मुक्त होते है।"[1]

छत्तीसगढ़ की वाचिक परम्परा में लोकगाथा की सुदीर्घ परम्परा है । छत्तीसगढ़ी लोकगाथा में प्रबंध काव्य की विशेषता पाई जाती है, यहाँ के लोकगाथा में इतिवृत्तात्मकता होती है। तथापि इसका संगीतिक पक्ष इन्हें रसासिक्त बना देता है । इनमें लयात्मकता का प्रवाह अच्छा बना रहता है जिसके कारण इसके प्रति जन आकर्षण रहता है। छत्तीसगढ़ी लोकगाथा के अंतर्गत पतिव्रत धर्म नारी का शौर्य, असत्य पर सत्य की विजय तथा देवी देवताओं का चित्रण मिलता है। इस लोकगाथा के अंतर्गत पंडवानी, गोपी चंदा गुजरी, ढोलामारू, पेवारा, गहिरीन, दसमत, लौरिक चंदौनी, ओड़निन, हीरा-मारा, कुंवर, रसालू इत्यादि आते हैं । इनमें से 'पंडवानी' ने तो विश्व स्तर पर प्रसिद्धि भी प्राप्त की है। पंडवानी महाभारत कालीन गाथा है जो छत्तीसगढ़ी भाषा को लोकगीत के रूप में ध्वनित करता है कथाकार इस गाथा के पाँच चरित्र को अपने परिवेश के अनुसार ढ़ाल

लेता है और लोकगीत के रूप में गाता है। पंडवानी कलाकारों में झाड़ू राम देवांगन, पूनाराम निशाद, तीजनबाई, ऋतु वर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

लोकगीत- छत्तीसगढ़ी लोकगीत का इतिहास बहुत प्राचीन है। यहाँ के लोकगीत और प्रकृति का संबंध बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा है। यहाँ की मान्यता है कि लोकगीत प्रकृति की देन है और जहाँ प्रकृति जितनी अधिक उदार होती है वहां उतने अधिक लोकगीत प्रस्फुटित होते है। छत्तीसगढ़ में प्रकृति का सम्पूर्ण सौन्दर्य विद्यमान है। यहाँ के लोकगीतों में प्रकृति को कभी उपासना के स्वर में, कभी सौंदर्यशालिनी, रमणीय के रुप में पूजा गया तो कभी मन के सुख-दुख के अनुभूति को सरस भावों के साथ अभिव्यक्त किया गया। इस अंचल में विविध अवसरों पर गाये जाने वाले लोकगीत इसकी सार्थकता को बढ़ा देते हैं। व्यक्ति के जन्म से लेकर प्रत्येक मंगल लोक अवसर तीज त्यौहार, धार्मिक पर्व, अनुष्ठानों, बदलती हुई ऋतुओं और बच्चों के खेल से जुड़े लोकगीत छत्तीसगढ़ी लोकगीतों को समृद्ध बनाते हैं। विषय की दृष्टि से इन गीतों के कई प्रकार हैं जैसे - संस्कार गीत, सोहर गीत, बरूआ गीत, विवाह गीत, देवी-देवताओं के विवाह गीत, मृत्यु संस्कार के गीत, देवी सेवा के गीत, पंडवानी गीत, लोरी, नवरात्रि, बारहमासी, तेल हरदी विहाव गीत, माय मौरी, परगहनी गीत, भोजली गीत इत्यादि। उदहारणस्वरूप-

बिहाव गीत- छत्तीसगढ़ में विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीत बिहाव गीत कहलाता है। विवाह के अवसर पर परम्परा का पालन करते हुए सर्वप्रथम चूल्हमाटी से विवाह वाले घर में चूल्हा बनता है। इस अवसर पर जो गीत गाया जाता है उसमें हास्य-व्यंग्य का पुट होता है-

“टोला माटी कोडे न नई आवय गीत धीरे-धीरे
तोर कनिहां ल ढील धीरे-धीरे
जतके परोसय ततके लील धीरे-धीरे।”

भोजली गीत- सावन में ही भोजली बोई जाती है और उसे विसर्जित किया जाता है। यहाँ भोजली को भी देवी माना जाता है और इससे सम्बंधित भोजली गीत महिलाएं गाती है।

“अहो देवी गंगा
देवी गंगादेवी गंगा लहर तुंरगा
हमर भोजली दाई के भीजे आहो देवी गंगा अहो देवी ...”

गौरा गीत- छत्तीसगढ़ में अनेक प्रर्व त्योहार होते हैं। इन त्योहारों पर भिन्न-भिन्न गीत गाये जाते हैं। दीपावली के साथ ही छत्तीसगढ़ अंचल में गोरा-गौरी पूजा भी की जाती है। गौरा बनाने के लिए मिट्टी लेने जाने से लेकर गौरा विसर्जन तक गीत गाने की परम्परा है।

खेलि खेलि ईसर चले जाये
नई दे घर में बसेरा
बढ़ी कहेंव बढ़ई मोर भइया
हमर ईसर ..... जाथे रे

राउत नाच- राउत छत्तीसगढ़ की एक प्रमुख जाति है जो स्वयं को कृष्ण का वंशज मानते है। गौ पालन इनका मुख्य व्यवसाय है। राउत जिन गायों को चराते है उनके गले में सोहाई बांधते है। राउत नाच का सम्बंध भी गायों से ही है जिसमें दोहों का प्रयोग किया जाता है। राउत आकर्षक वेशभूषा में अपने आपको सजा, हाथ में लाठी लेकर और पैरों में घुंघरू बांधकर नाचते हैं। यह नृत्य समूह में होता है जिसमें एक परी (नर्तकी) होती है जो वास्तव में स्त्री के वेश में पुरुष ही होता है। कबीर, तुलसी, रहीम आदि के दोहों के साथ गांव की कहावतें भी इस नृत्य का मुख्य अंग हैं। जैसे-

- गाय चरावे गाहेरा, भईस करावों ठेठवारो चारे
  कोती बहुत बोहावे दही दूध के धार रे।
- नारी निदा झन कर दाऊ, नारी नर के खान रे
  नारी नर उपजावे भौया, घुरू प्रहालाद समान रे।

लोकोक्तियाँ-छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य में लोकोक्तियों का प्रयोग सुंदर बन पड़ा है। लोकोक्तियों को छत्तीसगढ़ी में 'हाने' कहा जाता है। यहाँ की संस्कृति में बात-बात में सीख देने की प्रथा है। छत्तीसगढ़ी लोकक्तियों में मानव जीवन मूल्यों की सहज अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। यथा-

अतिथि सत्कार- अतिथि को देव तुल्य माना जाता है तथा सत्कार को अमूल्य माना गया है। किंतु जहाँ मान-सम्मान न मिले वहाँ न जाना ही अच्छा होता है।

"बिन आदरा के पहुना, बिन आदर घर जाय।
गोड़ धोय परछी में बइठै, सूरा बरोबर खाय।"

स्वाभिमान एवं नैतिकता- स्वाभिमान की भावना छत्तीसगढ़ी लोक जीवन के रग-रग में समाया हुआ है। वे सम्मान के साथ जीते है तथा दूसरों के सम्मान के प्रति भी सावधान रहते हैं। किंतु कुछ ऐसे भी लोग हैं, जो अपना उल्लू सीधा करने के प्रयास में लगे रहते हैं। ऐसे लोगों के बारे में छत्तीसगढ़ी में कहा जाता है-

"आइस भई लरकू, ठउके के बेर टरकू खाय बेरा हरक देय,
अऊ बूता के बेरा टरक देया।"

प्रतिभा- व्यक्ति का मान सम्मान प्रतिभा और गुण से होता है। उसके उम्र या आकार एवं विस्तार से नहीं। कुछ लोग अपनी प्रशंसा स्वयं करते है। इनके बारे में छत्तीसगढ़ी की यह कहावत बहुत प्रचलित है-

"अपन मुंह के करे बड़ाई
लोढ़। कहै में महादेव के बड़े भाई

सहायक सूची-

1. www.sahapedia.org>laokgaatha ki Bhartiya Parampra
2. https://dakshinkosaltoday.com
3. https://ignited.in>
4. 'छत्तीसगढ़ी साहित्य दशा और दिशा', नंदकिशोर तिवारी
5. छत्तीसगढ़ी सहित्य का इतिहास, विमल कुमार पाठक

-डॉ. नसरीन जान
संविदात्मक व्याख्याता, हिन्दी विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर